स्तनग्रंथियां एवं थानों के लक्षण

- स्तन ग्रंथियां एवं थानों पर छाले पड़ना । दूध दुहते समय दर्द होना ।
- दूध ग्रंथियों में रह जाने के कारण थनेला (मैस्टाइटिस) रोग का होना ।

थानों के लक्षण

उपचार

- खुर पका मुंह पका रोग एक विषाणु (वाइरस) जनित रोग है अत: इनका कोई विशिष्ट उपचार नहीं होता । इस रोग के लक्षणों की तीव्रता एवं विनाशक क्षमता को कम करने तथा अवसरवादी जीवाणुओं (बैक्टीरिया) के संक्रमण को रोकने के लिए औषधियां दी जाती है ।
- अवसरवादी जीवाणुओं के संक्रमण को रोकने के लिए जीवाणुरोधी (एंटीबायोटिक्स) औषधियों का प्रयोग ।
- मुख, खुर एवं थानों के छाले साफ करने के लिए एंटीसेप्टिक पदार्थों द्वारा उपरोक्त अंगों की धुलाई ।
- धोने के बाद छलो या अल्सर पर 2% बोरो ग्लिसरीन का लेप करना ।
- ज्वर की तीव्रता कम करने के लिए तापस तापमानरोधी औषधियों (एंटीपाय़ेटिक) का प्रयोग ।
- इन समय अवधि में पशु को मुलायम आहार (दलिया, हरा चारा आदि) दें ।

रोकथाम

- पशुओं का उचित समय पर वर्ष में दो बार टीकाकरण । पहला टीका मई - जून में एवं दूसरा टीका नवंबर - दिसंबर में लगवाएं ।
- स्वास्थ्य पशु को रोगी पशु के संपर्क से बचाएं ।
- रोगग्रसित पशु के दूध का सेवन ना करें ।
- रोग क्षेत्र में पशु के आवागमन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाये ।

नोट

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम पशु चिकित्सालय पर संपर्क करें ।

संकलनकर्ता

डॉ राजेश अग्रवाल एवं डॉ राजीव सिंह

खुरपका - मुंहपका रोग

(मोरवर)

पशु औषधि विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविघालय

शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौघौगिकी

विश्वविघालय

रणवीर सिंह पुरा जम्मू

181102

खुरपका - मुंहपका रोग

खुरपका- मुंहपका रोग तीव्र गति से फैलने वाला एक विषाणु जनित रोग है, जो प्राय: जुगाली करने वाले पशुओं में पाया जाता है । इस रोग में पशु को तीव्र ज्वार होता है तथा मुहं, खुर, स्तनग्रंथियों एवं थानों पर छाले पड़ जाते हैं ।

कारक

- यह रोग अति सूक्ष्म आकार के विषाणु (वायरस) द्वारा होता है ।
- भारतवर्ष में यह रोग ओ, ए, सी एवं एशिया-1 प्रकार के विषाणु द्वारा होता है ।

संवेदनशील पशु

- पालतू पशु : गाय, भैंस, भेड़, बकरी, याक, सूअर एवं ऊटं ।
- जंगली पशु : हिरण, नीलगाय, बारहसिंगा, जिराफ, मिथुन एवं जंगली सूअर ।

प्रसार / संक्रमण

- रोगी पशुओं के सीधे संपर्क द्वारा
- रोगी पशुओं की लार, स्त्राव, उत्सर्गी पदार्थों के संपर्क में आने से दूषित हुए आहर, चारा एवं दाना - पानी द्वारा ।
- पशुओं की उच्च वास में छोड़ दे गए विषाणु द्वारा

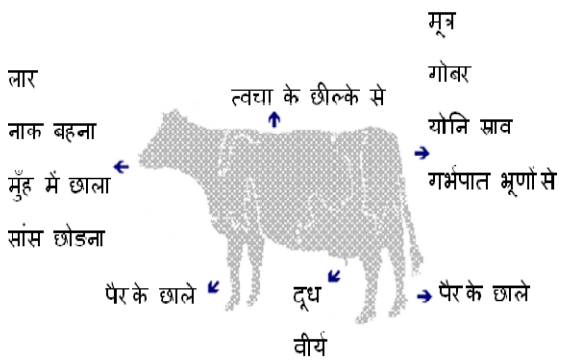

लक्षण

- संक्रमण के 2 से 8 दिन के भीतर ही पशु का सुस्त हो जाना ।
- पशु का जुगाली करना एवं चारा खाना बंद कर देना ।
- पशु को तीव्र बुखार 104-106 फारेनहाइट का होना ।
- पशु के मुंह, खुर एवं स्तनग्रंथियां पर छालो का पड़ना ।

मुख के लक्षण

- मुख के पीड़ादायक सूजन ।
- जीभ, मसूड़ों आने पर छाले ।
- मुख से चपचपाहट की विशिष्ट आवाज का आना ।
- लार का लंबाई में रस्सी की तरह बाहर गिरना व अधिक मात्रा में स्त्राव ।
- 24 घंटो के भीतर छालों का फुटकर लाल धब्बे जैसे घाव (अल्सर) बना देना जिनका एक **सप्ताह** के भीतर घर जाना ।
- मुंह में घाव के कारण पशु का ठीक से चारा ना खा पाना ।

मुख के लक्षण

खुर के लक्षण

- पशु के **खुरों** के बीच छाले बनकर फूटना ।
- पशु का **ठीक** प्रकार से खड़ा न हो पाना एवं लंगड़ाकर चलना ।
- खुरों के बीच उचित देखभाल कैसे अभाव में कीड़ों का पड जाना ।

खुर के लक्षण